



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY.

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)  
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 530]

नई दिल्ली, बौद्धवार, अश्विनी 6, 1988/आश्विन 14, 1910

No. 530]

NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 6, 1988/ASVINA 14, 1910

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

वित्त मंत्रालय  
(राजस्व विभाग)

नई दिल्ली, 6 अक्टूबर, 1988

अधिसूचना

सं. 28/88-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क (एन. टी.)

सा.का.नि. 996(अ).—केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय  
उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का  
1) की धारा 37 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए,  
केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 का और संशोधन करने  
के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्:—

1. (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम केन्द्रीय उत्पाद-  
शुल्क (संशोधन) नियम, 1988 है;

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त  
होंगे।

2. केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम 1944 में,

(क) नियम 57क के उपनियम (2) के परन्तुक के  
स्थान पर निम्नलिखित परन्तुक रखा जाएगा,  
अर्थात्:—

“परन्तु यह तब जब कि ऐसे मध्यवर्ती “उत्पादों”—

(क) का ऐसे अन्तिम उत्पाद के विनिर्माण में जिस पर  
उत्पाद-शुल्क, चाहे पूर्णतः या भागतः, उद्ग्रहणीय  
है, उत्पादन के कारखाने के भीतर उपयोग किया  
जाता है; और

(ख) को नियम 57क के अधीन जारी की गई किसी  
अधिसूचना के अधीन निवेश या अन्तिम उत्पाद  
के रूप में विनिर्दिष्ट किया जाता है।”

(ख) नियम 57क, में, उपनियम (5) के परन्तुक,  
निम्नलिखित उपनियम अन्तर्स्थापित किया जाएगा,  
अर्थात्:—

“(6) किसी विनिर्माता द्वारा किए गए आवेदन पर कलक्टर, ऐसी शर्तों और परिसीमाओं के अधीन रहते हुए, जो वह अधिरोपित करे उस विनिर्माता को, जो प्ररूप आर. जो. 23क में अपने खाते में मुजरा-रकम रखता हो और जो विनिर्माता के सयत्र या कारखाने को दूसरे स्थल पर अन्तर्गत करने के कारण अप्रयुक्त पड़ी हो, उसी विनिर्माता के ऐसे कारखाने को पूर्वोक्त खाते में की मुजरा-रकम का अन्तर्गत करने के लिए अनुज्ञा दे सकेगा।”

(ग) नियम 57अ में उपनियम (1) के स्थान पर निम्नलिखित उपनियम रखा जाएगा, अर्थात् —

“(1) (i) जहां निम्नो पर सदत शुल्क का मुजरा किसी अधिकारी या किसी विनिर्माता या किसी निर्धारिती को ओर से हुई किसी गलती, त्रुटि या गलत सूचना के कारण हिसाब में लिया गया है वहां समुचित अधिकारी, ऐसे मुजरे की तारीख से छह मास के भीतर ऐसे विनिर्माता या निर्धारिती पर सूचना की तामील कर सकेगा जिसने ऐसा मुजरा लिया है, ऐसा वह उसमें यह कारण दर्शित करने की अपेक्षा करते हुए कर सकेगा कि उसे ऐसे मुजरे के लिए अनुज्ञा क्यों नहीं किया जाना चाहिए और जहां मुजरे का पहले ही उपयोग किया जा चुका है वहां ऐसे मुजरे के समतुल्य रकम, उससे वसूल क्या नहीं की जानी चाहिए —

परन्तु यह कि जहां मुजरे को किसी विनिर्माता या किसी निर्धारिती की ओर से किसी जानबूझ कर किए गए गलत कथन, दुरमिसधि या त्रुटि के बचाव के कारण हिसाब में लिया गया है वहां इस खण्ड के उपबन्ध ऐसे प्रभावी होंगे मानो “छह मास” शब्दों के स्थान पर “पांच वर्ष” शब्द रखे गए हों।

(ii) समुचित अधिकारी, ऐसे विनिर्माता या निर्धारिती द्वारा, जिस पर खण्ड (i) के अधीन सूचना की तामील की गई है, किए गए अप्रयुक्त, यदि कोई हो, पर विचार करने के पश्चात् अननुज्ञात किए जाने वाले ऐसे मुजरे की रकम को (जो हेतुक दर्शित करने वाली सूचना में विनिर्दिष्ट रकम से अधिक न हो) अधिग्रहण करेगा और तदुपरि ऐसा विनिर्माता या निर्धारिती यदि ऐसे मुजरे का उपयोग कर लिया गया हो तो अननुज्ञात कि

गए मुजरे के समतुल्य रकम का सदाय करेगा अथवा इस प्रकार अननुज्ञात किए गए मुजरे का उपयोग नहीं करेगा, ”।

[फा. स. 267/108/87-सी.एक्स. 8]  
के सी. सिंह, उप सचिव

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 6th October, 1988

### NOTIFICATION

NO. 28/88-CENTRAL EXCISES (N.T.)

G.S.R. 996 (E).—In exercise of the powers conferred by section 37 of the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Central Excise Rules, 1944, namely :—

1. (1) These rules may be called the Central Excise (6th Amendment) Rules, 1988.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2 In the Central Excise Rules, 1944,—

(a) in rule 57D, in sub-rule (2), for the proviso, the following proviso shall be substituted, namely :—

“Provided that such intermediate products are—

(a) used within the factory of production in the manufacture of final product on which the duty of excise is leviable whether in whole or in part, and

(b) specified as inputs or as final product under a notification issued under rule 57A.”;

(b) in rule 57F, after sub-rule (5), the following sub-rule shall be inserted, namely :—

“(6) On an application made by a manufacturer, the Collector may, subject to such conditions and limitations as he may impose, permit a manufacturer having credit in his account in form RG 23A and lying unutilised on account of shifting of the plant or factory, belonging to the manufacturer, to another site, to transfer the credit in the account aforesaid to such factory of the same manufacturer.”;

(c) in rule 57I, for sub-rule (1), the following sub-rule shall be substituted, namely :—

“(1) (i) Where credit of duty paid on inputs has been taken on account of an error, omission or misconstruction, on the part of an officer or a manufacturer, or an assessee, the proper officer may, within

six months from the date of such credit, serve notice on the manufacturer or the assessee who has taken such credit requiring him to show cause why he should not be disallowed to such credit and where the credit has already been utilised, why the amount equivalent to such credit should not be recovered from him:

Provided that where such credit has been taken on account of wilful mis-statement, collusion or suppression of facts on the part of a manufacturer or an assessee, the provisions of this clause shall have effect as if for the words "six months" the word "five years" were substituted.

(ii) The proper officer, after considering the representation, if any, made by the manufacturer or the assessee on whom notice is served under clause (i), shall determine the amount of such credit to be disallowed (not being in excess of the amount specified in the show cause notice) and thereupon such manufacturer or assessee shall pay the amount equivalent to the credit disallowed, if the credit has been utilised, or shall not utilise the credit thus disallowed."

[F No. 267/108/87-CX.8]

K. C. SINGH, Dy. Secy.

